आर्योदय
ARYODAYE

LET US LOOK AT EVERYONE WITH A FRIENDLY EYE
- VEDA

Aryodaye Weekly No. 266 | ARYA SABHA MAURITIUS | 17th Mar. to 30th Mar. 2013

La hardiesse ou l'audace engendre toujours le succès dans la vie

Om! Kritam mé dakshiné hasté jayo mésavya āhitaha.
Gojid bhuyāsmaswajit dhananjaye hiranyajit.

Atharva Véda 7-50-8

Signification des mots :

Om – Dieu/Seigneur, **mé** – mon, ma, mes, **dakshiné** – droit/droite, **hasté** – dans la main, **kritam** – il y a l'audace, la hardiesse ou le courage, **savyé** – dans la main gauche, **jayaha** – victoire, **āhitaha** - il y a, **gojit/gojid** – celui qui peut posséder et élever des vaches, **ashwajt** – qui peut acquérir et maitriser les chevaux et les servir, **dhanjayah** – qui sait gagner et amasser la richesse, **hiranyajit** – qui peut acquérir et accumuler de l'or et d'autres choses précieuses, **bhuyāsam** - qu'il soit.

Interprétation

Le courage et l'audace/la hardiesse sont les deux facteurs essentiels de nos actions dans la vie.

L'action courageuse doit être toujours notre devoir sacré et c'est elle qui nous mène vers la réussite et le bonheur.

Dans ce mantra/verset d'Atharva Véda, Le seigneur nous dit que si dans une main on a le courage, dans l'autre main il y aura certainement le succès.

L'homme doit tout d'abord décider de ce qu'il veut devenir dans la vie. Puis, pour y parvenir, il doit définir ses objectifs, établir ses priorités, initier courageusement ses actions et aller de l'avant.

En même temps il doit être prêt à affronter et gérer les problèmes qui surgiront. Il doit aussi anéantir les ennemis qui se dresseront sur son chemin.

Ce n'est qu'après beaucoup de lutte et des tours de force de la part le l'homme que son action aboutisse et est couronnée de succès.

Ce mantra nous donne la clef ou le secret de la réussite dans la vie.

Il nous apprend que tout est possible d'atteindre dans la vie :- que ce soit l'éducation / le savoir, la richesse, le bétail, les métaux précieux tels que l'or, l'argent etc., les diamants, les perles et autres matériels précieux, et même le paradis et la béatitude!

Il faut être toujours laborieux, courageux et audacieux dans la vie pour réussir!

N. Ghoorah

पल्लवन

पतिवाचो अदाभ्यः

डा० उदय नारायण गंगू, ओ.एस.के, आर्य रत्न

उपर्युक्त सूक्ति सामवेद की है। इसमें उपदेश दिया गया कि हे मनुष्यो! भाषा का स्वामी बनकर अजेय बनो। प्रश्न उठता है कि भाषा का स्वामी बनकर अजेय कैसे बनेंगे? जब भाषा पर पूरा अधिकार हो जाता है तब व्यक्ति अपने समस्त हार्दिक भावों की अभिव्यक्ति में समर्थ होकर अजेय बनता है, भाषा संस्कृति की वाहिनी है। भाषा के ज्ञान से मानव सुसंस्कृत बनता है। वह यशस्वी बनकर जन-जन के मन में अपनी अमिट छाप छोड़ देता है। वह अच्छा वक्ता व लेखक बनकर विश्व के प्रांगण में अपनी विजय-पताका फहरा जाता है। भाषा के माध्यम से साहित्य-सागर में डुबकी लगाकर अनमोल मोती निकाल लाता है। महान् लेखक प्रेमचन्द लिखते हैं – भाषा ही राष्ट्र, साहित्य और संस्कृति का निर्माण करती है, आदर्शों की सृष्टि करती है।

हर राष्ट्र की एक भाषा होती है। यदि हम अपनी संस्कृति की रक्षा करना चाहें तो आवश्यक है कि सर्वप्रथम अपनी भाषा की रक्षा करें। हमारी भाषा ही हमें अजेय बनायेगी। अंग्रेज़, फ्रांसीसी, जर्मन, चीनी सभी अपनी-अपनी भाषा के कारण ही अजेय हैं।

पल्लवन

मदिरा-पान

रामायण का वचन है –

न हि धर्मार्थसिद्यर्थं, पानमेवं प्रशस्यते ।
पानादर्थश्च कामश्च, धर्मश्च परिहीपते ।।

अर्थात् मदिरा पीना न धर्म के लिए अच्छा है और न धन के लिए ही उचित है। मदिरा-पान से धन, कामनाएँ और धर्म व्यक्ति से दूर हो जाते हैं।

खेद है कि हिन्दू तो रामायण का नाम लेते हैं, पढ़ते और सुनते भी हैं, परन्तु इस अमर काव्य की शिक्षाओं से बहुत से लोग कोसों दूर भागे जा रहे हैं। शराब पीने से पहली हानि धर्म की होती है। धर्म का एक अर्थ है – कर्तव्य। मदिरा-सेवन करने वाले कर्तव्यच्युत हो जाते हैं।

शेष भाग पृष्ठ २ पर

सम्पादकीय

हर्षोल्लास का पर्व

हमारे समस्त पर्वों में अति हर्ष और उल्लास का पर्व होली है। इस महोत्सव में सभी हिन्दू आनंदित रहते हैं। बच्चे, जवान और वृद्ध जन, सभी एक साथ मिलकर होली के गीत गाते हैं और नाचते हैं और खुशी से झूम उठते हैं। उस दिन हमारे घरों तथा सामाजिक संस्थाओं में प्रेम-मिलाप का वातावरण छाया रहता है। सभी भाई-बहनों के हृदय से ईर्ष्या, द्वेष, द्रोह, वैमनस्य आदि दुर्भावनाएँ मिट जाती हैं। हर प्रकार की शत्रुता मित्रता में परिवर्तित हो जाती है। आपसी एकता स्थापित करने में होली एक महत्वपूर्ण उत्सव है ।

होली त्योहार हमारे घरों-समाजों में आनन्द, एकता तथा ईश्वर-निष्ठा प्रदान करने वाला है। हमारे जीवन से सारे दुख चिन्ताएँ और तनाव दूर करके आनन्द का समाँ बाँध देने वाला है। हवन-यज्ञ आदि में भाग लेकर ईश्वर-भक्ति की ओर झुका देने वाला महा पर्व है। इस उत्सव में हम एक साथ मिलकर रंगों से खेलते हैं। अबीर, गुलाल मलते हैं, होली के गीत गाकर कर झाल ढोलक बजाते हैं। यह उत्सव हमें आमोद-प्रमोद के साथ जीने की शिक्षा देता है और भौतिक बन्धनों से हटाकर आध्यात्मिक जगत में पदार्पण करने का अवसर देता है ।

कहा जाता है कि भारतीय किसानों का महान उत्सव होली है। खेतों की फ़सल तैयार होने पर वे आनन्दित होते हैं। वे सर्वप्रथम यज्ञ का प्रबन्ध करके अग्निदेव को भुने हुए अधपके अन्न अर्पित करते हैं, जिस नवागत अन्न को 'होलक' कहते हैं। इसी 'होलक' शब्द से होली शब्द बना है। सचमुच होली विशेष कर खेतिहरों का सबसे महान् पर्व है परन्तु धीरे-धीरे समस्त हिन्दू परिवार इस महोत्सव का अपूर्व आनन्द उठाने लगे ।

वैदिक पर्वों के आधार पर हम होली बड़ी धार्मिकता पूर्वक आयोजित करते हैं। यज्ञ-महायज्ञों, ईश-भजनों आदि गतिविधियों द्वारा आध्यात्मिक सुख, शान्ति और आनन्द प्राप्त करना हम आर्यों का उद्देश्य होता है। इसी कारण हमें बड़ी पवित्रता के साथ यह पर्व आयोजित करना चाहिए। आमोद-प्रमोद से अधिक यज्ञ-महायज्ञों को महत्व देना चाहिए, तभी यह लाभदायक सिद्ध होगा ।

समस्त आर्य बन्धुओं से निवेदन है कि होली पर्व वैदिक पद्धति द्वारा बड़ी निष्ठा पूर्वक मनाएँ। रंगों से ओत-प्रोत होकर इस त्योहार को तमाशा न बनाएँ। अप्रिय शब्दों द्वारा किसी को ठेस न पहुँचाएँ, यदि शोभायात्रा का प्रबन्ध हो तो बड़े नियन्त्रण के साथ यात्रा समाप्त करें, तभी इस हर्षोल्लास पर्व का महत्व कायम रहेगा, अन्यथा यह पागलों का त्योहार माना जाएगा।

हमारे जीवनकाल में पर्वों का आयोजन करना अति ज़रूरी है। हर एक उत्सव का प्रभाव हमारे जीवन को उत्तेजित, करके नई दिशा प्रदान करता है। नया जोश, उत्साह लगन और ज्ञान देता है। होली को फाग भी कहते हैं, क्योंकि यह फागोत्सव फाल्गुण महीने में मनाते हैं। इस अवसर पर भारतीय किसान यही प्रार्थना करते हैं कि नया साल सभी खेतिहरों के लिए मंगलमय हो। प्राकृतिक प्रकोपों से खेती नष्ट न हों। अनाजों की पैदावार में अधिक वृद्धि हो, जिनकी फ़सल से लक्ष्मी का निवास सदा उनके परिवारों में होता रहे।

हमारे देश में होली त्योहार समस्त हिन्दुओं को प्रेम और उल्लास पूर्वक जीने का संदेश देता है। बड़ी आस्था के साथ ईश्वर-भक्ति करने का पाठ पढ़ाता है। कड़ी मेहनत के साथ ज़मीन को उपजाऊ बनाने की प्रेरणा देता है। भूमि जुताई करके धन कमाने के लिए प्रेरित करता है। ज़मीन के अन्दर जो धन छुपा है, उसे खोद कर निकालने की शिक्षा देता है, ताकि हम सदा होली का आनन्द लेते रहें।

होली में नाच-गाकर झूम उठना, झाल-ढोलक बजाकर प्रसन्न होना और रंगों की पिचकारियों से अपनी सूरत और अपने वस्त्रों को बिगाड़ना ही आर्य परिवारों का उद्देश्य नहीं है। अपितु इस पावन पर्व में श्रद्धा पूर्वक यज्ञ-महायज्ञों का भव्य आयोजन करके भक्ति का वातावरण उत्पन्न करना हमारा लक्ष्य है। आपसी प्रेम-भाव प्रकट करके पारिवारिक मतभेदों को दूर करने का प्रण लेना हमारा कर्तव्य है। समाज-संस्थाओं में एकता स्थापित करके निस्वार्थ सेवा-भाव से संगठित होने की शिक्षा ग्रहण करना है। अपने कर्मक्षेत्र में ईमानदारी के साथ कड़ी मेहनत करके अपनी आर्थिक स्थिति में वृद्धि लाने केलिए प्रेरित होना है, तभी इस हर्षोल्लास पर्व का सही आनन्द हम प्राप्त कर सकेंगे।

इस महान् पर्व के अवसर पर हम परमपिता परमात्मा से यही प्रार्थना करें कि कभी भी हमारे परिवार में दरार न पैदा हों, हमारे समाज में फूट की अग्नि प्रज्वलित न हों, हमारे देश में किसी प्रकार की आपत्ति उत्पन्न न हों हमारे आपसी प्रेम, सहयोग और परिश्रम से पारिवारिक, सामाजिक और राष्ट्रीय उत्थान बराबर होता रहे।

हमारी यही आशा है कि हर साल की तरह इस साल भी होली पर्व मंगलकारी सिद्ध हों और हमें शारीरिक, मानसिक तथा आत्मिक आनन्द प्रदान करें।

बालचन्द तानाकूर

पृष्ठ १ का शेष भाग

माता-पिता, पितामह-पितामही के सतपथ को त्यागकर उस मार्ग पर बढ़ते हैं, जो अकल्याण की ओर ले जाता है। शराब इतनी खराब है कि आदमी का शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक बल छीन लेती है। उसे कई बीमारियों का शिकार बनाकर घर से घसिट कर अस्पताल में पहुँचा देती है। शराबी अपना धन शराब पीने और दवाई खरीदने में पानी की तरह बहाकर कंगाली को गले लगा लेता है। अपने बाल-बच्चों को दाने-दाने को मुहताज़ बना देता है। शराबी उचित-अनुचित सभी उपायों से धन कमाने की धुन में दीन-दुनिया दोनों से विदा हो जाते हैं। सड़कों पर जो अनेक जानलेवा दुर्घटनाएँ होती हैं, उनके पीछे शराबी चालकों की ही शैतानी होती है। वे न अपनी जान को जोखिम में डालते हैं, बल्कि कई निर्दोष लोगों को भी मौत के मुँह में धकेल देते हैं। शराब की बोतल एक ऐसा बन्द पानी है, जिसमें डूबने से कोई ज़िन्दा नहीं बचा है।

सज्जनों का कर्तव्य है कि वे अपने देशवासियों को मदिरा-पान से बचाये। ऐसी शिक्षा की व्यवस्था होनी चाहिए, जिससे शराब पीने वालों की आँखें खुलें।

होली या होलिकोत्सव

सत्यदेव प्रीतम,सी.एस.के,आर्य रत्न - मंत्री आर्य सभा मॉरीशस

होली महोत्सव ऋतु से सम्बन्ध रखने वाला उत्सव है जैसे दीपावली । इन दोनों पर्वों के उपरान्त और भी पर्व है जो मौसम से संबंधित है। कोई नाम तो सीधे ऋतु के नाम से ताल्लुक़ रखता है, जैसे वसन्त पंचमी। चीन में भी एक पर्व है – Spring Festival वसन्त सम्बन्धी पर्व।

भारत वर्ष आदि से कृषि प्रधान देश रहा है। आज भी बहुत तेज़ गति से औद्योगीकरण के बावजूद बहुत हद भारत देश कृषि पर निर्भर करता है। भारत गाँवों में बसा देश है और गाँवों में मज़दूर व किसान बसते हैं ग्रामीण अर्थ व्यवस्था खेती-बारी पर ही निर्भर करती है।

मोरिशस पूर्व में, चीनी उद्योग की आय पर निर्भर था एक ज़माना था जब ९०-९५ % आय की पूर्ति चीनी से होती थी।

यदि दीपावली का सम्बन्ध शारदीय नवसस्येष्टि से है तो, होली का सम्बन्ध सीधे वासन्ती नवसस्येष्टि से है।

होली के शुभावसर पर भारतीय किसान ५-६ फ़सलें काटते हैं, यथा – जव, गेहूँ, चना सरसों, अलसी (तीसी, एक प्रकार का तेलहन) आदि। किसान जब अपनी फ़सल काटते हैं तो खुशी से फूला नहीं समाते क्योंकि उनकी कड़ी मेहनत सफल होती। उन फ़सलों में वे लक्ष्मी का दर्शन करते हैं। परिवार की उन्नति का साधन है धन। धन केवल रुपये-पैसे को नहीं बोलते। इसके अंतर्गत सोने-चाँदी, हीरे-मोती ज़मीन-जायदाद सब आ जाते हैं।

भारत धर्म प्रधान देश है। सभी सफला के पीछे परमात्मा की कृपा व दया होती है। ऐसा वे मज़दूर-किसान समझकर, हवन-यज्ञ का अनुष्ठान करते हैं होली मनाने से पहले । यज्ञ में भौतिक अग्नि प्रज्वलित करते हैं और होम करते हैं नवागत अन्न का। अग्नि देव उस सामग्री को सूक्ष्म अति सूक्ष्म बनाकर वातावरण को शुम्रव पवित्र बनाता है ।

सदियों पूर्व की मान्यता को क़ायम रखते हुए अग्नि देव को सौंपकर ही बाँटते और खाते हैं। अकेले खाना पाप का भक्षण करना है इसलिए बाँटकर खाना ही धर्म है।

होली चूँकि खुशियाँ मनाने का अवसर है इस लिए गाते बजाते हैं और उत्साह पूर्वक उछलते-कूदते हैं। इसीलिए तो 'उत्सव' शब्द अभिभूत करते हैं। साथ मिलकर सामूहिक रूप से मनाते हैं। यह मेलजोल का मौक़ा होता है। अकेले जीवन जीना दुष्कर होता है। भगवान ने हमें अकेले जीने के लिए जन्म नहीं दिया। हमें एकेले जीने का आदेश नहीं दिया है। इस लिए वेद मंत्र कहता है :–

संगच्छध्वं संवदध्वं संवो मनांसि जानधाम् ।
देवा भागं यथापूर्वे संजानाना उपासते ।।

होली रंगों का त्योहार है। होली में एक रंग नहीं खेलते हैं होली में विविध रंग खेलते हैं। सभी रंग एक साथ मिलकर जब आते हैं तो शोभा तो बढ़ती ही है, अनेकता में एकता आ जाती है।

एक कहावत पुरानी है, 'एक रंग में रंग जाना' – एकता का कितना सुन्दर उदाहरण है।

रंग में लथपथ होकर एक हो जाते हैं। न बड़े होते हैं, न छोटे न ग़रीब होते हैं न अमीर; न अनपढ़ होते हैं न बहुत लिखे-पढ़े। जो साल भर एक दूसरे से बोलते नहीं वह भी वैरभाव भूलकर आपस में गले मिलते हैं। यह है होली की विशेषता।

भारत वर्ष पुराना देश है। पुराने देश की संस्कृति पुरानी होती है, धर्म पुराना होता है। सब कुछ पुराने होते हैं। हमारे धर्म में, हमारी संस्कृति में भौतिकता के साथ साथ आध्यात्मिकता भी है। इसी लिए तो संसार की पुरानी से पुरानी सभ्यता लुप्त हो गई पर पुराने भारत की सभ्यता अध्यात्मिकता के कारण अभी तक जीवित है और सदा जीवित रहेगी ।

होली कल मनाते थे आज मना रहे हैं और आने वाले कल में भी मनाएँगे ।

बच्चो तुम आशा हो

इन्द्रदेव भोला इन्द्रनाथ

बच्चो तुम आशा हो,
देश की अभिलाषा हो,

देश के भविष्य के
तुम नेता हो
राष्ट्र मंच के
तुम अभिनेता हो ।

तुम्हें अच्छे नागरिक
अच्छे नागर बन
देश का नाम
उजागर करना है
सूरज-तारे बन
चमचम चमकना है
बच्चे तुम आशा हो
देश की अभिलाषा हो ।

हाथ में तुम्हारे
हो चौरंगा झण्डा
चाहे खाना पड़े डण्डा
नहीं तुम्हें घबराना है
देश-भक्ति की लौ जगाना है
बच्चो तुम आशा हो,
देश की अभिलाषा हो ।

D.A.V. DEGREE COLLEGE

(run under the aegis of Arya Sabha Mauritius)

ENROLMENT OF STUDENTS 2013-2014

(Degree and Post-graduate Courses offered by the prestigious Kurukshetra University, Haryana, India)

Interested parties wishing to enrol for the Academic Year 2013-2014 are hereby requested to fill in the admission forms available at the reception desk of the Arya Sabha Mauritius, 1,Maharshi Dayanand Street, Champ de Mars, Port Louis or the D.A.V. Degree College, M2 Lane, Avenue Michael Leal, Pailles as from 11th March to 30th April, 2013.

Time Monday to Friday : 9.30 a.m. to 3.30 p.m.
Saturday : 9.00 a.m. to noon.

COURSES OFFERED *(Full Time and Part Time)*

B.A (Hons) English
B.A (Hons) Hindi
B.A (Hons) Philosophy
Bachelor of Information and Management (BIM)
Bachelor of Computer Applications (BCA)
M.A Hindi
M.A Philosophy

The courses are duly approved by the Tertiary Education Commission (TEC)

For further information please call us on Phone No. 212 2730 or 760 1105.

Students can also visit our website : www.aryasabhamauritius.mu

फ़्लाक आर्य ज़िला परिषद्

डा० चिरंजीव भारद्वाज आश्रम

फोन नं० - ४१५ २८५७

सूचना

सेवा में सविनय सूचित हो कि डा० चिरंजीव भारद्वाज आश्रम की सुमंगली यज्ञशाला में प्रति रविवार को दिन के १०.०० से १२.०० बजे तक यज्ञ, भजन तथा प्रवचन के कार्यक्रम चलते हैं। इच्छुक समाज अपना दिन तारीख निश्चित करके नीचे दिये गए पते पर भेजने की कृपा करें ।

You are kindly informed that the following activities are regularly held on every Sunday from 10.00 a.m. to noon at the seat of the Ashram : Yajna, Bhajan & Pravachan etc.

All Samajs are requested to participate actively. Please communicate the day and date you decide to participate on the following :

Phone No. (फोन नं०) -- 795 0570, 412 8360
Address (पता) -- Shri Abhaydeo Ramroop, Royal Road, Plaines des Roches, Riv. du Rempart

गतांक से आगे

दयानन्द जयंती एवं ऋषि-बोध

पं० मुकलाल लोकमान

अब हम 'आचार्य' पर स्वामी जी के मंतव्य देखें। वे कहते हैं — जो **सांगोपांग वेद-विद्याओं** का तथा सत्याचार का ग्रहण और मिथ्याचार का त्याग कराने होता है वह 'आचार्य' कहाता है।

सांगोपांग वेद विद्याएँ – संपूर्ण वेद विद्या के जानने वाला अध्यापक परा और अपरा विद्या का गहरा अध्ययन करने वाला ज्ञानी अध्यापक हो। नित्यप्रति सत्याचरण करने वाला तथा इसके विपरीत मिथ्याचार का त्याग करने वाला त्यागी मनुष्य ही 'आचार्य' कहलाने योग्य है ।

इन विचारों के साथ ही साथ स्वामी जी ने अपने अमर ग्रन्थ 'संस्कार विधि' में भी, इस पर प्रकाश डाला है जो निम्न प्रकार है – धर्मात्मा, शास्त्रोक्त विधि को पूर्ण रीति से जानने हारा, कुलीन, विद्वान्, सद्धर्मी, निर्व्यसनी, सुशील, वेद प्रिय, पूजनीय, सर्वोपकारी की पुरोहित संज्ञा है ।

'पुरोहित' साधारण अर्थ में पुर की भलाई – गाँव की भलाई । यहाँ पर ऋषि जी ने पुरोहित को एक नेता और पथ प्रदर्शक के रूप में देखा है – वे कहते हैं- 'पुरोहित' जो यजमान का हितकारी सत्योपदेष्टा हो, जो पुरोहित अपने यजमानों की भलाई के लिए नित्य सत्य उपदेशों से उनके ज्ञान का वर्धन करते हुए उन्हें अच्छे ज्ञान देता वह पुरोहित कहलाने योग्य है।

इस श्रृंखला में आज हमने गंभीरता पूर्वक स्वमन्तव्यामन्तव्य के आधार पर महर्षि दयानन्द जी के विचार समझने का प्रयास किया है। यज्ञ, पुरोहित और आचार्य पर उनके अपने दृष्टिकोण से परिचित होने का भी सुनहरा मौक़ा मिला ।

शिवरात्रि पर्व ही के अवसर पर मूलशंकर की आत्मा जागृत हुई और उन्होंने मानव समाज पर कृपा करके सच्चा शिव, सच्चा धर्म, जो सनातन हो, सर्व-हितकारी हो, उसका बोध कराया ।

वेद का ज्ञान दिया और बताया कि ईश्वर एक है अनेक नहीं है। वह विष्णु रूप में सारी दुनिया में व्याप्त है, सर्वव्यापक है। उनको बोध होने के बाद सारी दुनिया को बोध कराना ही उनका मुख्य उद्देश्य था, जिसको पूरा करने के लिए स्वामी दयानन्द जी ने पुत्रवत आर्य समाज की स्थापना की और कहा – वेद की ओर लौटो !

वेद ही शिव है। **'वेदो अखिलो धर्म मूलम'** वेद सभी धर्मों का मूल है। यही आदेश और यह संदेश हर साल ऋषि बोध देता है।

मॉरिशसीय आर्य समाज की विभूतियाँ

प्रह्लाद रामशरण

पुस्तक - मॉरिशसीय आर्य समाज की विभूतियाँ, लेखक – प्रह्लाद रामशरण, प्राक्कथन – डा० रामप्रकाश, समर्पण – गुरुप्रसाद दलजीतलाल, पृष्ठ संख्या - २५०, प्रकाशक - स्टार पब्लिकेशन प्रा० लि०, ४/५ आसफ अलि रोड, नई दिल्ली (भारत), वितरक - माता सुन्दरी पब्लिशर्स लि०, ३०, स्वामी दयानन्द स्ट्रीट, बो बासें, मॉरिशस, मूल्य - पाँच सौ रुपये ।

अपनी औपनिवेशिक महत्वाकांक्षाओं के कारण अंग्रेज़ सरकार ने पराधीन भारत से व्यापक स्तर पर श्रम जीवियों को अनेक द्वीपों पर निर्वासित किया। मॉरिशस भी उनमें से एक है। भारतीयों ने मॉरिशस की मिट्टी को अपने घोर परिश्रम से स्वर्ण में परिवर्तित कर दिया। मॉरिशस का इतिहास इन लोगों की गौरव गाथा है । इसमें मॉरिशस की आर्य समाजों और आर्य समाजियों का योगदान महत्वपूर्ण एवं अविस्मरणीय है। गुलामी के दिनों में जिन आर्य वीरों ने वेद की ज्योति को मॉरिशस की धरती पर प्रज्वलित रखा और दयानन्द का संदेश जनसाधारण तक पहुँचाकर उन्हें अपने संस्कारों और भारत की मिट्टी की गन्ध से जोड़े रखा, वे महापुरुष वन्दनीय है और उनका जीवन अनुकरणीय है ।

मॉरिशसीय आर्य समाज की विभूतियाँ नामक पुस्तक लिखकर यशस्वी लेखक श्री प्रह्लाद रामशरण शिक्षा, संस्कृति, दर्शन, इतिहास, लोकगाथा और समालोचना। साहित्य के अधीती विद्वान् हैं। समय समय पर उनके अनेक शोध-आलेख मॉरिशस और भारत के प्रतिष्ठित पत्रों में प्रमुखता से प्रकाशित होते रहे हैं। मॉरिशस में हिन्दी के प्रचार-प्रसार हेतु वे अनवरत प्रयासशील रहते हैं। मॉरिशस की सरकार और अनेक संस्थाओं ने श्री प्रह्लाद रामशरण को अनेक सम्मानों से सम्मानित किया है। यद्यपि हिन्दी, अंग्रेजी और फ्रेंच में अभी तक आप की सत्तर पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं तथापि आपका यह प्रकाश्यमान ग्रन्थ इस दृष्टि से विशिष्ट है कि यह आने वाली पीढ़ियों को उनके पूर्वजों के सांस्कृतिक अनुराग एवं संघर्षशील जीवन से परिचित कराकर उनका मार्ग प्रशस्त करेगा। भविष्य में मॉरिशस में आर्य समाज का संदेश को घर-घर पहुँचाने के लिए यह ग्रन्थ अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगा। यह पुस्तक हर आर्य समाज में होनी चाहिए। मैं लेखक को उनके इस उत्कृष्ट लेखक के लिए कोटिशः बधाई देता हूँ।

डा० रामप्रकाश, संसद सदस्य (राज्य सभा)
नई दिल्ली,भारत

प्रथम भाग : मॉरिशस में आर्य समाज ने १०० वर्ष पूरे कर लिए हैं। भारतवंशियों की अनेक विभूतियों ने इस शक्तिशाली संगठन का स्वर्णिम इतिहास रचा है। उन्होंने अवसर पाकर (लगभग दो शती का) जीवन के सभी क्षेत्रों में अपनी श्रेष्ठता सिद्ध की है। निस्संदेह उनकी मेधा को निखारने में इन विभूतियों का महत्व पूर्ण योग अवदान है। उनके अलावा भारत से समय-समय पर आये आर्य विद्वानों ने महर्षि दयानन्द के विचारों से इस द्वीप के निवासियों को बड़ी संख्या में संस्कारित किया है। ऐसे आर्य वीरों को प्रह्लाद रामशरण ने अपनी पुस्तक 'मॉरिशसीय आर्यसमाज की विभूतियाँ' के माध्यम से शब्दांजलि दी है। यह पुस्तक हाल ही में नई दिल्ली के स्टार पब्लिकेशंस से प्रकाशित हुई है।

प्रह्लाद रामशरण मूलतः इतिहासकार हैं। अपनी प्रकृति के अनुरूप उन्होंने यह पुस्तक गहन शोध करके लिखी है। उन आर्य सेवकों के बारे में प्रामाणिक जानकारी देने के लिए मॉरिशस के अभिलेखागार से पड़ी सामग्री को खंगाला है। उन्होंने पुस्तक की भूमिका में स्वयं लिखा है कि आर्य समाज से जुड़े सेवकों पर सामग्री जुटाना लोहे के चने चबाना जैसा कार्य रहा है। इस पुस्तक को तैयार करने में उन्हें ४० वर्ष लगे हैं। अनेक विभूतियों के साथ उन्हें संवाद एवं सहकार का अवसर भी मिला है। उन्होंने यह पुस्तक एक इतिहासकार के दृष्टिकोण से लिखी है। इसीलिए इसमें दी गई ६३ जीवनियाँ परिचय मात्र न होकर महत्वपूर्ण ऐतिहासिक दस्तावेज बन गई है। रामशरण जी के अनुसार सभी तथ्यों की बारीक जाँच के बाद जो सत्य सामने आया, उसी को उन्होंने पुस्तक में दिया है।

रणजीत पांचाले, रायब लेरी, यू.पी; भारत

एक ऐतिहासिक पुरुष प्रह्लाद रामशरण। मानव प्रतिभा का धनी होता है। जिसमें लेखन कला भरी होती है। यह लेखनी भी कितनी अद्‌भुत है, जो बुद्धि से मिलकर कोरे कागज़ को खूब सूरत रंगों से रंग देती है, वह प्रह्लाद रामशरण कहलाता है। रंगना बहुत कठिन होता है। उसमें भी ऐतिहासिकता अति कठिन होती है। इति अ ह अ आस ऐसा ही था कहना कितना कठिन होता है, उसके लिए तिथियों का जीवन की यात्रा का, व्यक्ति के व्यक्तित्व का ज्ञान ठीक-ठीक स्मृति-पट पर होना आवश्यक है। इसमें प्रवीण है श्री प्रह्लाद रामशरण।

'मॉरिशसीय आर्य समाज की विभूतियाँ' ग्रन्थ के प्रथम भाग में ५४ तथा दूसरे भाग में ९ आर्य विभूतियों के विषय में लिखकर संसार में प्रकाशित कर दिया है। यह ग्रन्थ जिनके हाथ में आयेगा वही उनकी गाथा गायेगा। १० जनवरी २०१३ को मुझे इस देश में चौदह वर्ष हो जायेंगे। मैं ने देखा है कि वे निरन्तर लिखते ही रहते हैं। जैसे उन्होंने लिखा है कि मॉरिशस का आर्य समाज एक वट-वृक्ष है, सत्य है। श्री रामशरण जी केवल उसकी छाया में नहीं पले। बल्कि एक-एक बीज एक-एक फूल, मूल, एक-एक तना, शाखा, प्रशाखा, पत्तों, फूलों और फलों को उन-उनके समयानुसार देखा, विचारा अनुभव किया, तब श्रद्धा से अपनी लेखनी प्रेरित किया। मैं ईश्वर से प्रार्थना करती हूँ, उनकी आयु दीर्घ हों और लेखनी भी चलती रहे।

(शुभाकांक्षिणी डा० उषा शर्मा)

मॉरिशसीय आर्य समाज की विभूतियाँ की विषय सूची

१. पं० गयासिंह खेलावन सिंह (१८७३ - १९५४)
२. तोतालाल (खेमलाल लाला) (१८७५ - १९१६)
३. गुरुप्रसाद दलजीतलाल (१८७४ - १९४८)
४. पं० आत्माराम विश्वनाथ (१८८१ - १९५५)
५. पं० काशीनाथ किश्टो (१८८४ - १९४७)
६. पं० रामलखन शर्मा (१८८६ - १९८२)
७. गोपीनाथ छत्तर (१८८६ - १९८२)
८. भाग्यवती (मक्खनसिंह) गयासिंह (१८८७ - १९१६)
९. रामशरण मोती (१८८८ - १९४४)
१०. पं० महावीर किनू (१८९० - १९७४)
११. पं० जगनन्नदन नन्दलाल (१८९० - १९६८)
१२. पं० वानप्रस्थी धुरन्धर (१८९० - १९६८)
१३. पं० अनिरूद शर्मा (१८९० - १९६०)
१४. पं० देवसरण शाहजादा (१८९४ - १९६०)
१५. श्रीमती कौशल्या बुलेल (१८९४ - १९६३)
१६. पं० लक्ष्मणदत्त शास्त्री (१८९५ - १९८०)
१७. पं० गोपी चिंतामन (१८९७ - १९९६)
१८. पं० बलराम आपाडू (१८९८ - १९६५)
१९. श्री नन्द किशोर सदल (१९९९ - १९७७)
२०. पं० हरिकृष्ण बिहारी (विशारद) (१९०० - १९६३)
२१. पं० बेणीमाधव सतिराम (१९०१ - १९८०)
२२. डा० झगरू शिगोबिन्द (१९०१ - १९९०)
२३. पं० मोहनलाल मोहित (१९०२ - २००५)
२४. पं० नारायण संजीवी (१९०२ - १९७७)
२५. श्री रामप्रसाद निऊर (१९०५ - १९७३)
२६. पं० रामरूप रामलगन (१९०६ - १९८२)
२७. श्री रामधन पूरण (१९०६ - १९८२)
२८. श्री शिवगुलाम तोरल (१९०७ -१९८५)
२९. श्री दीपनारायण पदारथ (१९०७ - १९८८)
३०. पं० रामावतारनाथ वर्मा (१९०८ - १९९४)
३१. श्री तिलक प्रसाद कालीचरण (१९०९ - १९८८)
३२. श्री रामलाल गुमानी (१९११ - १९८४)
३३. पं० सुखदेव रामप्यार (विद्यावाचस्पति) (१९११ - १९६५)
३४. श्री रामसुभग गोबर्धन (१९१४)
३५. श्रीमती सुदेवी भीमा (१९१५ - १९८९)
३६. श्री ब्रह्मदत्त नन्दलाल (१९२० - १९८४)
३७. पं० देवकीनन्दन गोबिन (१९२२)
३८. श्री तारामन बंधन (१९२४ - १९८९)
३९. श्री ईश्वरदत्त नन्दलाल (१९२६ - १९८४)
४०. श्री मुनीन्द्रनाथ वर्मा (१९२६)
४१. पं० दीनदयाल बन्धन (१९२६)
४२. श्रीमती लखावती हरगोबिन्द (१९२९ - १९९६)
४३. श्री परमहंस श्रीकिसून (१९२९)
४४. श्री केशवदत्त चिंतामणि (१९३३)
४५. श्री मूलशंकर रामधनी (१९३३ - २०००)
४६. श्री प्रह्लाद रामशरण (१९३७)
४७. श्री सत्यदेव प्रीतम (१९३९)
४८. प्रो० सुदर्शन जगेसर (१९४०)
४९. श्री भरत मंगरू (१९४०)
५०. श्रीमती धनवन्ती रामचरण (१९४२)
५१. डॉ० उदयनारायण गंगू (१९४३)
५२. पं० राजमन रामसाहा (१९४४)
५३. पं० धर्मेन्द्र रिकाय (१९५२)
५४. श्री हरिदेव रामधनी (१९५४)

दूसरा भाग

१. डा० चिरंजीव भारद्वाज
२. स्वामी स्वतन्त्रानन्द
३. स्वामी ज्ञानानन्द (मेहता जैमिनी)
४. स्वामी सोमानन्द का देहावसान
५. स्वामी ध्रुवानन्द
६. स्वामी अभेदानन्द
७. ओम प्रकाश त्यागी
८. स्वामी दिव्यानन्द
९. डॉ० उषा शर्मा

ऋषिबोध

पंडिता सत्यभामा दोमन

माँगो मिलेगा। खटखटाओ खुलेगा।

यदि संसार कँटीला है तो पुष्प बनके, तू खिलता, महकता मधु की सदा वृद्धि करता रह ।

अथर्ववेद –

यशाः पृथिव्या आदित्य उपस्थे -
हंभूयासं सवितेव चारु ।

भूमंडल की भुवन गोद में सविता के समान हो जाऊँ मैं यशयुक्त और सुन्दर ।

शिवरात्रि आई भक्तों की शक्ति जगाने, उसी रात ऋषिबोध से ज्ञानी ऋषि देव ईश्वर विश्वासी होकर जो सर्वशक्ति संपन्न विधाता ब्रह्म विश्वकर्ता है। शुद्ध सच्चिदानन्द, निरामय नित्य निःशंक न मरता है। धरो उसी का ध्यान, दूसरा कौन मुक्ति का दाता है। आदि मूल सबका ही 'शंकर' एक समझ में आता है।

इतिहास बताता है – 'समय की देन'

परमात्मा की अपनी सृष्टि में महान् आत्माओं को भेजकर जनता के जीवन में पुनर्जागरण करके ज्योतित कर देते हैं ।

'श्रवणकुमार' ने मातृ-पितृभक्ति से, 'रत्नाकर' ने श्री वाल्मीकि से, 'श्री रामचन्द्र जी' पिता के आज्ञापालन से, 'सिद्धार्थ' ने उद्‌बुद्ध बुद्ध की दया का स्रोत बहाया। 'आइजाक न्यूटन' की दिव्य दृष्टि से ही पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण के नियम को साक्षात्कार किया आदि। शिवरात्रि पावन आई संदेश ऋषि का लाई।

पिता जी ने पुत्र दयाल जो अभी १४ वर्षीय जिसके कोमल हृदय में क्या छाप पड़ सकती है कि आज रात्रि में साक्षात् शिव का दर्शन होगा। इसके लिए व्रत और रात्रि जागरण करना है इस वचन को शिरोधार्य कर मंदिर पहुँचे, आधी रात बीती, सभी शिवभक्त सो गये पर लक्ष्य यही था कि कब भगवान दर्शन देंगे? जो नहीं सोचा था, वह आश्चर्यजनक दृश्य दिखाई दिया तो पिताजी से प्रश्न किया, यह कैसा भगवान है जो एक तुच्छ जीव को नहीं हटा सका? अपने पिता के उत्तर से असंतुष्ट, दोनों व्रतों का उलंघन किया, सो गया और व्रत को भी तोड़ दिया।

अभी यह चिंता मिटी नहीं, अचानक बहन तथा चाचा की मृत्यु हुई। 'मृत्यु' से घबराकर छुटकारा पाने का उपाय ढूँढ़ने लगा, समस्त परिवार, पिता के धन-वैभव तुच्छ लगने लगा। फिर एक दिन अवसर पाकर उसने पिता-गृह त्याग दिया और मथुरा में दण्डी विरजानन्द द्वारा ज्ञान-ज्योति से एक माँ नहीं, अखिल विश्व नारी का सम्मान दिया। अपने व्रत से, सही जागरण से, सच्चे शिव को पाया, मृत्यु तो क्या निर्वाण पद की शिक्षा देकर मानव मात्र का उद्धारक बना।

देव दयानन्द वेद उद्धारक, दया की दृष्टि रखने वाले से हम भी बोध मार्ग को खोजें, जिससे सत्य मार्ग पर चलकर अपने लक्ष्य को सफल बनाएँ तब बोध रात्रि सार्थक होगी।

जान सच्चिदानन्द को, शंकर जगदाधार।
धन्य दयानन्द ऋषि थे, सबका किया सुधार ।।

RISHI BODH 2013

Pt. Jayechand AUKHOJEE

This festival was celebrated this year on Sunday 10th of March in the compound of the D.A.V College of Morc. St. André. To mark this event, the celebrations were spread over 4 days from 7th to 10th March. A very splendid tent was the venue of the festival. The organizing committee was constituted by the Members of Arya Zila Parishads of Pamplemousses, Riv. du Rempart and Port Louis under the aegis of Arya Sabha Mauritius. The daily programme for the first 3 days was from 3.00 to 6.00 p.m. The programme consisted of yajna, bhajan, poem recitation, sketches by children and youth and messages based on Rishi Bodh and Vedic mission of Swami Dayanand. The Purnahuti held on Sunday 10th was lively broadcast by M.B.C TV. The following personalities graced the occasion by their presence:-- His Excellency Mr R. Puryag, GCSK, GOSK, President of the Republic of Mauritius, Ministers Hon. R. Rittoo and Hon. S. Faugoo,PPS, Smt. P. Bholah and Sanskrit teacher, Dr. Panday from India. Meals for the four days were offered by Mr. Parmanand Sankar, Shri Sudhir Kanhye and Arya Sabha Mauritius. Cultural programmes were presented by Shri Vishwajeet Doola and Group, Shri Lallman Rohitsingh and Group, Shri Dharmanand Ramnauth and Group, Shri Chandradeo Jeebodhun and Group, Shri Jwala Prasad Kaliachetty and Group, D.A.V College of Morc. St. André teaching and non-teaching staff.

The daily function was presented and animated by Dr. Jaychand Lallbeeharry, Shri Bissoondave Bissessur, Miss Karishma Ramjuttun and Shri Satyadeo Peerthum. Daily yajna was performed by Ptas D. Chintamanee, S. Chumun, Pt. D. Reekaye, assisted by all the priests and lady priests present.

Messages were addressed by the following eminent personalities :-- Shri H. Ramdhony, Arya Ratna, President of Arya Sabha Mauritius, His Excellency Mr R. Puryag,GCSK,GOSK, President of the Republic of Mauritius. In his address the President underlined the major role played by the Arya Samaj Movement. He enumerated some prevalent evils in India -- 1. Bal Vivah, 2. Plight of widows …?, 3. Sati prathaa, 4. Deprivation of women from education. He advised people to go back to the Veda again.

Messages were also delivered by the following personalities:-- Dr. J. Lallbeeharry, Dr. Panday of India, Shri R. Guttee - President Hindi Speaking Union, Smt. S. Ramphul, Pts. M. Boodhoo, D. Reechaye, S. Daiboo - President Purohit Mandal, lady priests Pta. D. Chintamanee and S. Chumun. All these messages dealt with Rishi Bodh and mission of Swami Dayanand. On the last day 10th of March, (the closing ceremony) thanksgiving was assigned to the Asst. Secretary of Arya Sabha Mauritius Shri B. Tanakoor. He thanked the Pamplemoussess Arya Zila Parishad, in particular Shri G. Teeluck, Dr. J. Lallbeeharry and Pt. M. Boodhoo, the Riv. du Rempart and Port Louis Parishads specially Shri B. Bissessur, Pt. Reechaye and Smt. S. Ramphul of Arya Sabha Mauritius, the Pamplemousses District Council, the Rector and staff of D.A.V College of Morc. St. André and police for discipline and order. Special thanks were given to the food suppliers all the 4 days, musicians and singers, President of Republic and Ministers and so many others who contributed in the success of the celebrations. We must not forget that the whole function was directed by the Arya Sabha Mauritius. There was an attendance of not less than 300 during the first 3 days and on the last day the tent packed to capacity.

The most important and noteworthy item was the initiation of 16 new priests and lady priests to carry on the mission of Swamiji. The 4 day celebrations were totally very successful. It had a very impressive impact on the audience. It is now hoped that elders and parents will make it a must to motivate their children and youngsters to attend all the satsangs and social and cultural gatherings, so that they can acquire human values and qualities. Parents must now avoid believing that when their children will do so, they will fail in their exams. On the contrary, these will help the students in their studies.

जानता सं गमेमहि ।

(ऋ० ५/५१/१५)

हम विद्वानों का संग करें ।

ARYODAYE
Arya Sabha Mauritius
1, Maharshi Dayanand St,
Port Louis, Tel: 212-2730,
208-7504, Fax : 210-3778,
Email : aryamu@intnet.mu,
www.aryasabhamauritius.mu
प्रधान सम्पादकः डॉ० उदय नारायण गंगू,
पी.एच.डी.,ओ.एस.के,आर्य रत्न
सह सम्पादक : सत्यदेव प्रीतम,
बी.ए.,ओ.एस.के.,सी.एस.के.,आर्य रत्न
सम्पादक मण्डल :
(१) डॉ० जयचन्द लालबिहारी,*पी.एच.डी*
(२) श्री बालचन्द तानाकूर,*पी.एम.एस.एम,*
आर्य भूषण
(३) श्री नरेन्द्र घुरा,*पी.एम.एस.एम*
Printer : BAHADOOR PRINTING LTD.
Ave. St. Vincent de Paul, Les Pailles,
Tel : 208-1317, Fax : 212-9038

Erratum

वेदाःमृतम् के बदले **वेदाऽमृतम्**

गत २२ दिसम्बर को आर्य सभा में श्रद्धानन्द बलिदान दिवस की गतिविधियों के अन्तर्गत मेरी पुस्तक **वेदाऽमृतम्** का विमोचन किया गया था। प्रस्तुत पुस्तक मेरे २४ वैदिक वाणी प्रवचनों का एक संकलन है। पुस्तक का शीर्षक **वेदाःमृतम्** छापा गया है जब कि सभी शीर्षक वेदाऽमृतम् होना चाहिए था। विनम्र निवेदन है कि विमोचन के दिन जिन लोगों ने पुस्तक ली थी वे स्वयं इस शीर्षक में सुधार लाने की कृपा करें। बाकी प्रतियों में उचित संशोधन कार्य हो चुका है। अतः अब जो लोग भी पुस्तक लेंगे उसका शीर्षक वेदाऽमृतम् पाएँगे। इस असुविधा के लिए हमें खेद है। यह पुस्तक आर्य सभा के पुस्तकालय में उपलब्ध है।

निवेदक
पण्डित यश्वन्तलाल चूड़ामणि

The "Autobiography" of a Goat

Like all other animals, after traversing through many rebirths, when I entered into my mother goat's womb, and suffered the ignonimity of being encaged there for five months and took birth, I found this world a nice and pleasant place to live in. Man and his little children treated me with affection, held me in their laps and gave me tender green leaves to eat. Drinking my goat-mother's milk, I began to grow quickly. Her master used to pet me and take me to his farm, where I used to feed myself on green leaves. He was not annoyed even when I evacuated my body-waste in his field. When I asked my mother the reason for this, I was told that our waste turns into manure of his plants, giving him great yields. That is why he was never angry with me.

Time continued to pass gradually and I went on living contentedly with my companions. After about a year and a half, a stranger came to my master. They talked for some time and then my master brought together about 40-50 of my companions and we were made to stand in a group. Then a big van arrived there and we were forcibly thrust into it. I wanted to go to my mother, but could not. When I moved towards her, an ugly-looking man hit me with a stick. Helplessly, we squeezed, ourselves in the van. My head began to reel due to overcrowding. My companions were also in bad shape. Fear was writ large on every body's face and the jerks caused by the moving vehicle was scratching our skins. The day went by and night fell and another day and night passed but the van was constantly on the move. Twice the van-owners threw us some food but it barely sufficed to fill half our bellies. Next day, the van stopped in a big city. A tall, bearded man approached the van, he gave the van-owner something and we were all turned over to him. Our new master drove us with sticks to a house. He made all of us stand in the sun. Restlessness caused by sunshine, hunger and thirst, and to top it the fear of the stick was pushing us towards our death.

After a long wait we were pushed into the house. A man sitting there was examining my companions with some tube attached to his ears. When our turn came our owner gave him something, and he sent us inside without checking. I could not understand this but a senior companion of mine told me that he was a doctor and it meant our death was approaching us. Already half-dead with hunger, thirst and tiredness, I lost all my appetite on hearing this and could not swallow whatever little was given to us. Even water hurt instead of soothing my throat. Then the door of an adjoining room was opened and what I saw there made me tremble with terror. My legs refused to carry my weight and darkness appeared before my eyes. Cries and wails of my companions coming out of that room made me weep. I tried to cry but the voice could not come out of my mouth and throat. I tried to run out but a man caught hold of both my hind legs and threw me into that room where a horrible person looking like a giant was slitting the throat of one of my companions with a massive knife. Suddenly, a thought flashed in my mind. Is this the same man who claims to be the descendent of sages and saints and who always sings the songs of pity and non-violence? No! this cannot be the same man because even wild animals, who are solely dependent on flesh diet, never indulge in such mass killing as he was doing. While such thoughts were passing through my mind, a man caught hold of my ears and pushed me toward that horrible man. The pain now turned my fear into rage, I tried to pull myself away, but in vain. My frustration resulted in boiling of my blood, froth started oozing from my mouth and involuntarily I passed urine and solid waste. But no one took pity on my helpless condition. Rather, two other persons caught hold of me. One caught me by the legs and the other one started cutting my throat with a dagger. Fountain of blood spurted from my neck and my entire body was filled with pain. Now there was no alternative, but to pray for instant death. I only wished they would kill me with one blow and not prolong my agony. But no, I was destined to suffer more because the knife went only half way through my neck. Death was still far away and every moment of this torture dragged on like a year. Cursing my fate and remembering God, I continued praying and waiting for death.

National Vegetarian Association

*Reference from : **Vegetarian or non Vegetarian Book by Gopinath Aggarwal***

..... to be continued

शिवरात्रि पर ऋषि बोध हुआ

पं० श्याम दयबू

सब को सच्चा बोध कराने फिर शिवरात्रि आ गई ।
आर्य-जनों के भाग्य जगाने फिर शिवरात्रि आ गई ।।

सच्चे शिव की पूजा करना औरों को सिखलाना है ।
जो गुमराही भटक रहे हैं, उनको राह दिखाना है ।।
सबको मंज़िल तक पहुँचाने फिर शिव-रात्रि आ गई ।
शयन-जागरण पूजा के आडम्बर दूर हटाना है ।।
वैदिक संध्या हवन सिखाने फिर शिव-रात्रि आ गई ।
आर्य-जनों के भाग्य जगाने फिर शिवरात्रि आ गई ।।

मन, वाणी और कर्म हमेशा, निर्मल-शुद्ध बनाना है ।
धोखा ढग़ा फ़रेब, कपट छल कभी नहीं अपनाना है ।।
बोधोत्सव पर बोध हुआ, सच्चे-शिव दर्शन पाना है ।
अपने अन्तःकरण के अन्दर, मन-मंदिर में दर्शन पाता है ।।
अन्दर की तस्वीर दिखाने, फिर-शिवरात्रि आ गई ।
आर्य-जनों के भाग्य जगाने .....

कठिन तपस्या कड़ी साधना वैदिक मार्ग पे चलना है ।
ढोंग और पाखण्ड मिटाने, ओ३म् ध्वज लहराना है ।।
न घबराना, न पछताना, अन्धविश्वास मिटाना है ।
खबरदार होकर दुनिया में, सदा जागते रहना है ।।
ऋषि-बोध का पाठ-पढ़ाने फिर शिवरात्रि आ गई ।
आर्य-जनों के भाग्य-जगाने .....